शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय

राजनांदगांव (छ.ग.)

संस्कृत विभाग

वार्षिक प्रतिवेदन

सत्र - 2011-12

विद्या सर्वस्य भूषणम्

प्रभारी
डॉ. शंकर मुनि राय
सहायक प्राध्यापक - हिन्दी

प्राचार्य
डॉ आर.एन.सिंह

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़

संस्कृत विभाग

वार्षिक प्रतिवेदन : सत्र–2011–12

प्रभारी

डॉ. शंकरमुनि राय

संविदा प्राध्यापक

श्रीमती सरिता पाण्डेय

जनभागीदारी प्राध्यापक

कुमारी शिल्पी ठाकुर एवं कुमारी सुशीला केवट

संस्कृत साहित्य परिषद

अध्यक्ष–कुमारी सरोज पटेल **उपाध्यक्ष**– कुमारी तीजन वर्मा **सचिव**– कुमारी ऋतु वैष्णव **सह सचिव**– श्रीमती यामिनी यादव

कुल विद्यार्थी

स्नातक......................................137

स्नातकोत्तर..............................085

कुल अतिथि व्याख्यान........................2

नेट/सेट के लिए विशेष कार्यशाला

संस्कार और संस्कृति पर एकदिवसीय शिविर का आयोजन

अभिभावक–सम्मेलन

संस्कृति ज्ञान परीक्षा में पांच विद्यार्थियों को 'ए' ग्रेड

संस्कृत विभाग में संस्कार और संस्कृति का दृश्य

संस्कृत विभाग में 'संस्कार और संस्कृति' का दृश्य

संस्कृत साहित्य परिषद का उदघाटन एवं अतिथि व्याख्याना–1

समस्त भारतीय भाषाओं की ताकत है संस्कृत–महेशचंद्र शर्मा

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत साहित्य परिषद के उदघाटन अवसर पर डॉ महेशचंद्र शर्मा ने कहा कि संस्कृत समस्त भारतीय भाषाओं की ताकत हैं। इसके अध्ययन से हमें भारतीय भाषाओं की जानकारी तो मिलती ही है, अपनी संस्कृति के प्रति भी जागरुकता बढ़ती है। छ.ग. में संस्कृत की स्थिति पर बोलते हुए डॉ. शर्मा ने कहा कि यह भूमि लोमश ऋषि, भवभूति, वल्लभाचार्य तथा वाल्मीकि जैसे संस्कृत मनीषियों की है। यह मेधदूतम जैसी कृति की रचनास्थली है।

इससे पूर्व प्राचार्य डॉ. आर एन सिंह संस्कृत साहित्य परिषद का उदघाटन करते हुए बताया कि प्रावीण्य सूची के आधार पर कु. सरोज पटेल को अध्यक्ष, कुमारी तीजन वर्मा को उपाध्यक्ष, कुमारी ऋतु वैष्णव को सचिव तथा श्रीमती यामिनी साव को सह सचिव मनोनीत किया गया है। कार्यकारी सदस्य के रुप में दामोदर मेश्राम, मनीष पाल, राजीव वर्मा, तामेश्वरी साहु, दीपिका, संगीता वर्मा, रामचंद्र साहु तथा गायत्री साव के नाम मनोनीत किये गये हैं। डॉ. सिंह ने इस अवसर पर कहा कि संस्कृत पढ़नेवाले हर छात्र को स्वयं को सौभग्यशाली समझना चाहिए। इस भाषा के अध्ययन से मानसिक तथा शारीरिक शक्ति प्राप्त होती है। संस्कृत के मंत्रोच्चर से हृदय रोग का उपचार किया जा रहा है। शंख बजानेवाला, वेदपाठ करनेवाला तथा ओमकार का जाप करनेवाला व्यक्ति कभी हृदय रोग से ग्रस्त नही होता है। संस्कृत संवेदना और सज्जनता का पाठ पढ़ानेवाली भाषा है।

संस्कृत विभाग के प्रभारी प्राध्यापक डॉ. शंकरमुनि राय ने महाविद्यालय में संस्कृत विषय के अध्ययन–अध्यापन तथा आंतरिक मूल्यांकन के संबंधन में प्रयोग किये जानेवाले नवीन तकनीकि के बारे में बताया। आपने कहा कि इस विषय में अच्छी सफलता के लिए कमजोर छात्रों के लिए अलग से अतिरिक्त कक्षाएं लगाने के बारे में विचार किया जा रहा है। साथ ही अभिभावकों से सतत संपर्क बनाते हुए लापरवाह छात्रों को सुधारने की भी योजना बनाई जा रही है। जो विद्यार्थी ज्यादा अनुपस्थित रहते हैं उनके अभिभावकों से दूरभाष पर संपर्क कर जाकारी प्राप्त की जाती है। परीक्षा में अच्छी सफलता प्राप्त करनेवाले छात्रों के अभिभावकों को विभाग के तरफ से शुभकामनाएं और बधाई पत्र भी भेजे जाते हैं।

अतिथि व्याख्यान–2

वेद सम्मत ज्ञान ही लोकहितकारी है : डॉ मिश्र

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत साहित्य परिषद द्वारा ''वेद और उसकी प्रासंगिकता'' विषय पर अतिथि व्याख्यान आयोजित किया गया। प्राचार्य डॉ आरएन सिंह की अध्यक्षता में आयोतित इस कार्यकम के मुख्य वक्ता थे संस्कृत महाविद्यालय, रायपुर के वेद प्राध्यापक ड़ॉ रामकिशोर मिश्र।

डॉ. मिश्र ने कहा कि वेद का सामान्य अर्थ है–ज्ञान। सृष्टि विधान के चार खंड ही वेद हैं। इनकी कुल 1131 शाखाएं बतायी जाती हैं, जिनमें उपलब्ध चार वेद है–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ये चारो क्रमशः ज्ञानखंड, कर्मखंड, गानखंड और औषधिखंड के रूप में वर्णित हैं। वास्तव में वेद ज्ञान और विज्ञान के आगार हैं। जो चीज वेद और शास्त्र सम्मत होती है वही लोकहिकारी और लोकप्रिय होती है। इस रुप में रामचरित मानस एकमात्र इसका उदाहरण है।

मुख्य वक्ता ने इस कार्यकम में वेदपाठ के सही तरीके का जिक्र करते हुए उसकी बारीकियों का उल्लेख किया। आपने बताया कि वेद के गलत पाठ से किस प्रकार अर्थ का अनर्थ हो जाता है। अतः पाठकों को चाहिए कि संस्कृत के उच्चारण विधान और उसके सस्वर पाठ के तरीके से अवगत हों।

इनसे पूर्व प्राचार्य डॉ आर एन सिंह ने संस्कृत भाषा और साहित्य के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत के वैदिक गणित पर विदेशी लोगो की नजर पड़ी हुई है। पर बड़े अफसोस की बात है कि अपने ही देश में इसके प्रति उपेक्षा के भाव देखे जा रहे हैं।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा–2012

संयोजक : शांतिकुंज हरिद्वार

'ए' ग्रेड प्राप्त विद्यार्थियों की सूची

1. कुमारी योगेश्वरी
2. प्रदीप कुमार साहू
3. नेहरूदास साहू
4. कमल कुमार
5. ऋतु वैष्णव
6. कुमारी केशरी धीवर
7. रवि कुमार लहरे
8. सुमित्रा गुप्ता
9. कविता साहू
10. मंजु दास

(डॉ. शंकर मुनि राय)

प्रभारी, संस्कृत विभाग

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय

राजनांदगांव छ.ग.

कार्यालय, प्राचार्य : शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

प्रेस विज्ञप्ति

दिग्विजय कॉलेज में संस्कार और संस्कृति पर कार्यक्रम सम्पन्न

समाजिक जीवन में घटते जीवन मूल्य के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में 'संस्कार और संस्कृति' शीर्षक कार्यक्रम आयोजित किये गये। संस्कृत साहित्य परिषद द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में स्थानीय शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को भी शामिल किया गया था।

प्राचार्य डॉ. आर एन सिंह के अनुसार यह कार्यक्रम यूजीसी विस्तार गतिविधि के अंतर्गत आयोजित किया गया था। कार्यक्रम प्रभारी डॉ शंकर मुनि राय ने बताया कि इसमें लगभग एंक सौ विद्यार्थियों को भारतीय संस्कार और संस्कृति के प्रति व्यावहारिक प्रशिक्षण दिये गये। साथ ही कार्यक्रम में शामिल विद्यार्थियों को परिषद द्वारा प्रकाशित पुस्तिका 'संस्कार और संस्कृति' की प्रति भी वितरित की गई।

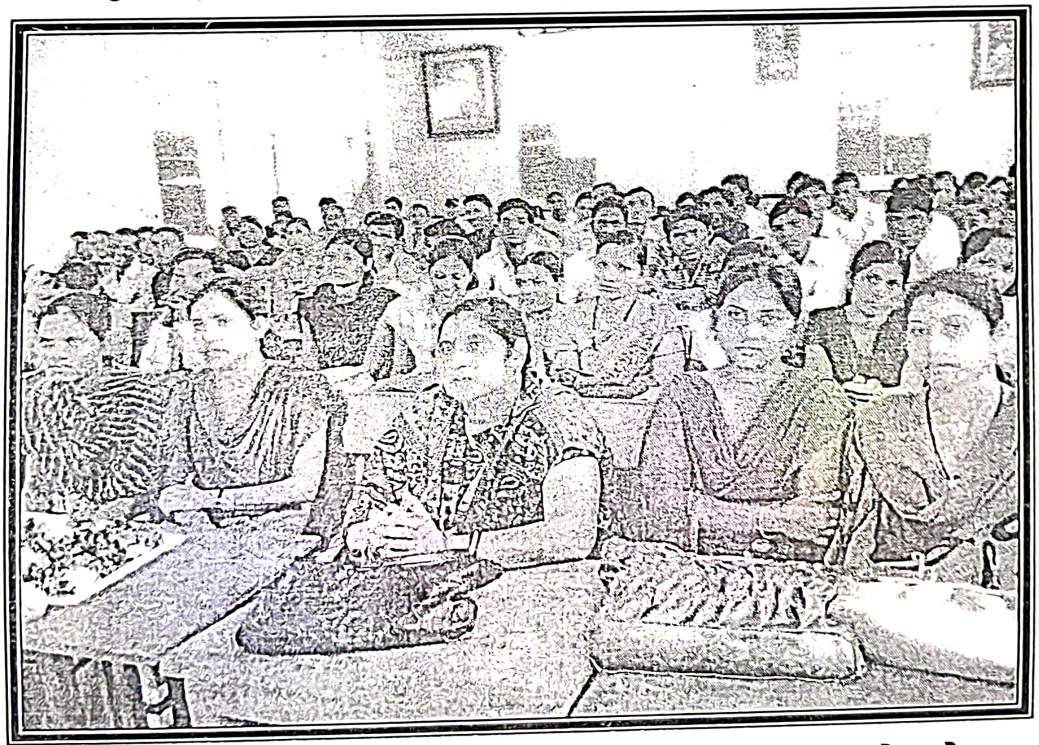

श्रीगणेशपूजन एवं सरस्वती वंदना से प्रारंभ किये गये इस कार्यक्रम में वैदिक विधा़न की दैनिक पूजा एवं प्रार्थना विधि को गेय मंत्रों के साथ सम्पन्न करने के

तरीके बतलाये गये। कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. शंकरमुनि राय ने कहा कि भारतीय संस्कृति में विनम्रता का बहुत महत्व है। इसलिए हमें विनम्र बनने के लिए बड़े-बुजुर्गों के प्रति आदर भाव रखने का संस्कार दिया जाता है।

डॉ. राय ने आगे कहा कि भारतीय संस्कृति में पूज्य परंपरा होने के कारण ही हमारे यहां माता-पिता, गुरु तथा बड़े जनों के प्रति सम्मान प्रकट करने को शिष्टाचार के रुप में शामिल किया गया है। इसी संस्कार के चलते हमारे यहां प्रकृति पूजा के प्रति आकर्षण बढ़ा है। वृक्ष, जल, अग्नि और नवग्रहादि की पूजन परंपरा में हमारे यही संस्कार कार्य कर रहे हैं।

अतिथि वक्ता श्री राजेन्द्र द्विवेदी नें १६ संस्कारों का महत्व बताया तथा भारतीय संस्कृति में पूज्य परंपरा का भी उल्लेख किया। आपने कहा कि देव शक्तियों के आवाहन तथा विदा करने के भी वैदिक तरीके बतलाये गये हैं। संस्कृत के श्लोकों के सही उच्चारण तथा उसके मंत्रपाठ से होनेवाले वैज्ञानिक लाभ को भी आपने विस्तार से बताया। कार्यक्रम समाप्ति के बाद कुमारी शिल्पी ठाकुर ने आभार प्रकट किया।

Principal
Govt. Digvijay College
Rajnandgaon (C.G.)

कार्यालय, प्राचार्य : शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

प्रेस विज्ञप्ति

दिग्विजय कॉलेज में संस्कार और संस्कृति पर कार्यक्रम सम्पन्न

समाजिक जीवन में घटते जीवन मूल्य के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में 'संस्कार और संस्कृति' शीर्षक कार्यक्रम आयोजित किये गये। संस्कृत साहित्य परिषद द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में स्थानीय शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को भी शामिल किया गया था।

प्राचार्य डॉ. आर एन सिंह के अनुसार यह कार्यक्रम यूजीसी विस्तार गतिविधि के अंतर्गत आयोजित किया गया था। कार्यक्रम प्रभारी डॉ शंकर मुनि राय ने बताया कि इसमें लगभग एक सौ विद्यार्थियों को भारतीय संस्कार और संस्कृति के प्रति व्यावहारिक प्रशिक्षण दिये गये। साथ ही कार्यक्रम में शामिल विद्यार्थियों को परिषद द्वारा प्रकाशित पुस्तिका 'संस्कार और संस्कृति' की प्रति भी वितरित की गई।

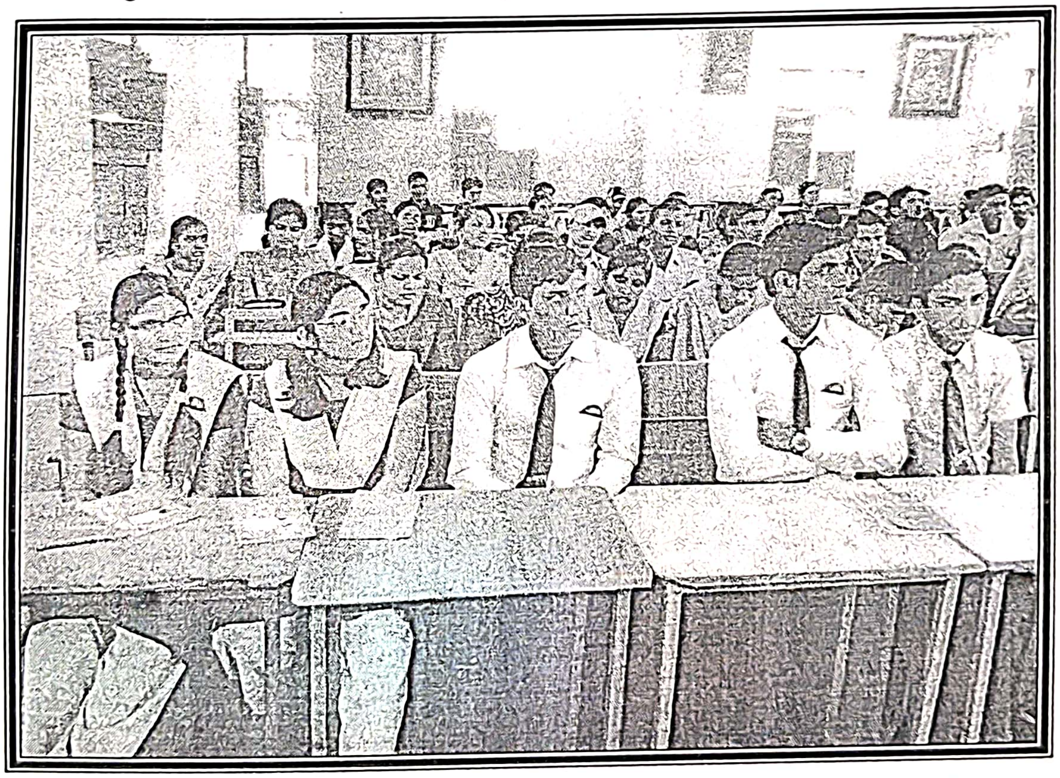

श्रीगणेशपूजन एवं सरस्वती वंदना से प्रारंभ किये गये इस कार्यक्रम में वैदिक विधान की दैनिक पूजा एवं प्रार्थना विधि को गेय मंत्रों के साथ सम्पन्न करने के

तरीके बतलाये गये। कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. शंकरमुनि राय ने कहा कि भारतीय संस्कृति में विनम्रता का बहुत महत्व है। इसलिए हमें विनम्र बनने के लिए बड़े-बुजुर्गों के प्रति आदर भाव रखने का संस्कार दिया जाता है।

डॉ. राय ने आगे कहा कि भारतीय संस्कृति में पूज्य परंपरा होने के कारण ही हमारे यहां माता-पिता, गुरु तथा बड़े जनों के प्रति सम्मान प्रकट करने को शिष्टाचार के रुप में शामिल किया गया है। इसी संस्कार के चलते हमारे यहां प्रकृति पूजा के प्रति आकर्षण बढ़ा है। वृंक्ष, जल, अग्नि और नवग्रहादि की पूजन परंपरा में हमारे यही संस्कार कार्य कर रहे हैं।

अतिथि वक्ता श्री राजेन्द्र द्विवेदी नें १६ संस्कारों का महत्व बताया तथा भारतीय संस्कृति में पूज्य परंपरा का भी उल्लेख किया। आपने कहा कि देव शक्तियों के आवाहन तथा विदा करने के भी वैदिक तरीके बतलाये गये हैं। संस्कृत के श्लोकों के सही उच्चारण तथा उसके मंत्रपाठ से होनेवाले वैज्ञानिक लाभ को भी आपने विस्तार से बताया। कार्यक्रम समाप्ति के बाद कुमारी शिल्पी ठाकुर ने आभार प्रकट किया।

Principal
Govt. Digvijay College
Rajnandgaon (C.G.)

कार्यालय, प्राचार्य : शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

प्रेस विज्ञप्ति

दिग्विजय कॉलेज में संस्कार और संस्कृति पर कार्यक्रम सम्पन्न

समाजिक जीवन में घटते जीवन मूल्य के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में 'संस्कार और संस्कृति' शीर्षक कार्यक्रम आयोजित किये गये। संस्कृत साहित्य परिषद द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में स्थानीय शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को भी शामिल किया गया था।

प्राचार्य डॉ. आर एन सिंह के अनुसार यह कार्यक्रम यूजीसी विस्तार गतिविधि के अंतर्गत आयोजित किया गया था। कार्यक्रम प्रभारी डॉ शंकर मुनि राय ने बताया कि इसमें लगभग एक सौ विद्यार्थियों को भारतीय संस्कार और संस्कृति के प्रति व्यावहारिक प्रशिक्षण दिये गये। साथ ही कार्यक्रम में शामिल विद्यार्थियों को परिषद द्वारा प्रकाशित पुस्तिका 'संस्कार और संस्कृति' की प्रति भी वितरित की गई।

श्रीगणेशपूजन एवं सरस्वती वंदना से प्रारंभ किये गये इस कार्यक्रम में वैदिक विधान की दैनिक पूजा एवं प्रार्थना विधि को गेय मंत्रों के साथ सम्पन्न करने के

तरीके बतलाये गये। कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. शंकरमुनि राय ने कहा कि भारतीय संस्कृति में विनम्रता का बहुत महत्व है। इसलिए हमें विनम्र बनने के लिए बड़े-बुजुर्गों के प्रति आदर भाव रखने का संस्कार दिया जाता है।

डॉ. राय ने आगे कहा कि भारतीय संस्कृति में पूज्य परंपरा होने के कारण ही हमारे यहां माता-पिता, गुरु तथा बड़े जनों के प्रति सम्मान प्रकट करने को शिष्टाचार के रुप में शामिल किया गया है। इसी संस्कार के चलते हमारे यहां प्रकृति पूजा के प्रति आकर्षण बढ़ा है। वृक्ष, जल, अग्नि और नवग्रहादि की पूजन परंपरा में हमारे यही संस्कार कार्य कर रहे हैं।

अतिथि वक्ता श्री राजेन्द्र द्विवेदी नें १६ संस्कारों का महत्व बताया तथा भारतीय संस्कृति में पूज्य परंपरा का भी उल्लेख किया। आपने कहा कि देव शक्तियों के आवाहन तथा विदा करने के भी वैदिक तरीके बतलाये गये हैं। संस्कृत के श्लोकों के सही उच्चारण तथा उसके मंत्रपाठ से होनेवाले वैज्ञानिक लाभ को भी आपने विस्तार से बताया। कार्यक्रम समाप्ति के बाद कुमारी शिल्पी ठाकुर ने आभार प्रकट किया।

Principal
Govt. Digvijay College
Rajnandgaon (C.G.)

कार्यालय, प्राचार्य : शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

प्रेस विज्ञप्ति

दिग्विजय कॉलेज में संस्कार और संस्कृति पर कार्यक्रम सम्पन्न

समाजिक जीवन में घटते जीवन मूल्य के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में 'संस्कार और संस्कृति' शीर्षक कार्यक्रम आयोजित किये गये। संस्कृत साहित्य परिषद द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में स्थानीय शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को भी शामिल किया गया था।

प्राचार्य डॉ. आर एन सिंह के अनुसार यह कार्यक्रम यूजीसी विस्तार गतिविधि के अंतर्गत आयोजित किया गया था। कार्यक्रम प्रभारी डॉ शंकर मुनि राय ने बताया कि इसमें लगभग एक सौ विद्यार्थियों को भारतीय संस्कार और संस्कृति के प्रति व्यावहारिक प्रशिक्षण दिये गये। साथ ही कार्यक्रम में शामिल विद्यार्थियों को परिषद द्वारा प्रकाशित पुस्तिका 'संस्कार और संस्कृति' की प्रति भी वितरित की गई।

श्रीगणेशपूजन एवं सरस्वती वंदना से प्रारंभ किये गये इस कार्यक्रम में वैदिक विधान की दैनिक पूजा एवं प्रार्थना विधि को गेय मंत्रों के साथ सम्पन्न करने के

तरीके बतलाये गये। कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. शंकरमुनि राय ने कहा कि भारतीय संस्कृति में विनम्रता का बहुत महत्व है। इसलिए हमें विनम्र बनने के लिए बड़े-बुजुर्गों के प्रति आदर भाव रखने का संस्कार दिया जाता है।

डॉ. राय ने आगे कहा कि भारतीय संस्कृति में पूज्य परंपरा होने के कारण ही हमारे यहां माता-पिता, गुरु तथा बड़े जनों के प्रति सम्मान प्रकट करने को शिष्टाचार के रुप में शामिल किया गया है। इसी संस्कार के चलते हमारे यहां प्रकृति पूजा के प्रति आकर्षण बढ़ा है। वृक्ष, जल, अग्नि और नवग्रहादि की पूजन परंपरा में हमारे यही संस्कार कार्य कर रहे हैं।

अतिथि वक्ता श्री राजेन्द्र द्विवेदी नें १६ संस्कारों का महत्व बताया तथा भारतीय संस्कृति में पूज्य परंपरा का भी उल्लेख किया। आपने कहा कि देव शक्तियों के आवाहन तथा विदा करने के भी वैदिक तरीके बतलाये गये हैं। संस्कृत के श्लोकों के सही उच्चारण तथा उसके मंत्रपाठ से होनेवाले वैज्ञानिक लाभ को भी आपने विस्तार से बताया। कार्यक्रम समाप्ति के बाद कुमारी शिल्पी ठाकुर ने आभार प्रकट किया।

Principal
Govt. Digvijay College
Rajnandgaon (C.G.)

वेद सम्मत ज्ञान ही लोकहितकारी- डॉ.मिश्र

राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में संस्कृत साहित्य परिषद द्वारा वेद और उसकी प्रासंगिकता विषय पर अतिथि व्याख्यान आयोजित किया गया। प्राचार्य डॉ. आरएन सिंह की अध्यक्षता में इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता संस्कृत महाविद्यालय रायपुर के वेद प्राध्यापक डॉ. रामकिशोर मिश्र थे।

डॉ. मिश्र ने कहा कि वेद का सामान्य अर्थ है-ज्ञान। सृष्टि विधान के चार खंड ही वेद हैं। इनकी कुल 1131 शाखाएं बतायी जाती हैं, जिनमें उपलब्ध चार वेद है ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ये चारो क्रमशः ज्ञानखंड, कर्मखंड, गानखंड, और औषधिखंड के रूप में वर्णित हैं। वास्तव में वेद ज्ञान और विज्ञान के आगार हैं।

सबेरा संकेत
21.11.11

वेद सम्मत ज्ञान ही लोकहितकारी

राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत साहित्य द्वारा वेद और उसकी प्रासंगिकता विषय पर अतिथि व्याख्यान आयोजित किया गया। प्राचार्य डॉ आरएन सिंह की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे संस्कृत महाविद्यालय रायपुर के वेद प्राध्यापक डॉ रामकिशोर मिश्र। डॉ. मिश्र ने कहा कि वेद का सामान्य अर्थहै-ज्ञान सृष्टि विधान के चार खंड ही वेद है। इनकी कुल 1131 शाखाएं बतायी जाती है। जिनमें उपलब्ध चार वेद है-ऋग्वेद यजुर्वेद सामदेव और अथर्ववेद। ये चारो क्रमशः ज्ञानखंड कर्मखंड गानखंड और औषधिखंड के रूप में वर्णित है। वास्तव में वेद ज्ञान और विज्ञान के आगार है, जो चीज वेद और शास्त्र सम्मत होती है वही लोकहितकारी और लोकप्रिय होती है। इस रूप में रामचरित मानस एकमात्र इसका उदाहरण है।

हरिभूमि - 18.11.11

दिग्विजय में शिक्षक-पालक सम्मेलन

राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में पालक-शिक्षक सम्मेलन का आयोजन किया गया। छात्र-छात्राओं की उपस्थिति में अभिभावकों और शिक्षकों ने कए दूसरे की बातों को ध्यानपूर्वक सुना तथा महाविद्यालयीन माहौल को बेहतर बनाने के लिए एक दूसरे को सहयोग प्रदान करने के वचन दिए। सम्मेलन के प्रारंभ में विभाग के प्रभारी डॉ. शंकरमुनि राय ने अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि महाविद्यालय के शैक्षणिक माहौल को बेहतर बनाने के लिए जरूरी है कि अभिभावकगण शिक्षकों के संपर्क में रहे तथा अपने पाल्य की हर गतिविधि का मूल्यांकन करते रहे। कार्यक्रम में प्रत्येक विद्यार्थी को बोलने का अवसर दिया गया तथा अपने पालकों और शिक्षकों के बीच समस्याएं रखने को कहा गया। कुमारी उज्वला कठाने ने कहा कि इस संस्था में अध्ययन-अध्यापन के साथ ही जो शैक्षणिक भ्रमण का कार्यक्रम आयोजित होता है, उससे विद्यार्थियों को देश-दुनिया के बारे में तरह तरह की जानकारियां मिल रही है। इस अवसर पर जनभागीदारी प्राध्यापिका शिल्पी ठाकुर ने कहा कि यहां अनुशासन पूर्ण माहौल में पढ़ाई करने के लिए विद्यार्थी उत्सुक रहते है।

नई दुनिया
6.3.2012

भास्कर 5.3.12

धीवर प्रावीण्य सूची में

राजनांदगांव। गायत्री परिवार द्वारा आयोजित संस्कृति ज्ञान परीक्षा में दिग्विजय कालेज के पांच विद्यार्थियों को ए ग्रेड मिला है। इस विभाग के एमए पूर्व की छात्रा केशरी धीवर को प्रावीण्य सूची में दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। प्राचार्य डा.आरएन सिंह ने हर्ष व्यक्त किया है।

संस्कृत विभाग में अभिभावक सम्मेलन

'संस्कार और संस्कृति' कार्यक्रम में विभिन्न संस्थाओं के विद्यार्थियों ने भाग लिया

संस्कृत विभाग में शिक्षक–पालक सम्मेलन सम्पन्न

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में पालक–शिक्षक सम्मेलन का आयोजन किया गया। छात्र–छात्राओं की उपस्थिति में अभिभावकों और शिक्षकों नें एक दूसरे की बातों को ध्यानपूर्वक सुना तथा महाविद्यालयीन महौल को बेहतर बनाने के लिए एक–दूसरे को सहयोग प्रदान करने के वचन दिये।

सम्मेलन के प्रारंभ में विभाग के प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय ने अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि महाविद्यालय के शैक्षणिक माहौल को बेहतर बनाने के लिए जरूरी है कि अभिभावक गण शिक्षकों के सम्पर्क में रहें तथा अपने पाल्य की हर गतिविधि का मूल्यांकन करते रहें। प्रतियोगितापूर्ण वैश्विक परिवेश में हर विद्यार्थी आज तनाव की स्थिति में पढ़ाई कर रहा है। ऐसे में जरूरी है कि अभिभावक और शिक्षक उसकी समस्याओं को गंभीरता से समझें और उसे तनावमुक्त रखने का प्रयास करें। आपने अभिभावको से अपील की कि वे अपने व्यस्त समय में से कुछ समय अपने बच्चों के लिए अवश्य निकालें। आपने अभिभावकों को अपने तथा शिक्षकों के मोबाईल नम्बर नोट करवाये तथा कहा कि जब कभी जरूरत हो, आप अपने पाल्य की प्रगति की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। आपने विद्यार्थियों से अपील की कि वे खाली समय में ग्रंथालय का लाभ उठायें।

कार्यक्रम में प्रत्येक विद्यार्थी को बोलने का अवसर दिया गया तथा अपने पालकों और शिक्षकों के बीच समस्याएं रखने को कहा गया। सभी विद्यार्थियों ने महाविद्यालय के शैक्षणिक माहौल की सराहना की तथा ऐसी संस्था में पढ़ते हुए स्वयं को गौरवान्वित बताया। जो विद्यार्थी दूसरी संस्थाओं से पढ़कर यहां आये हैं, उन्होंने यहां के अनुशासन की सराहना की। जो विद्यार्थी बी.ए. स्तर पर संस्कृत नहीं पढ़े हैं उन्होंने भी कहा कि यहां के शिक्षकों के सहयोगी व्यवहार के चलते किसी प्रकार की कठिनाई नहीं हो रही है। अभिभावकों ने कहा कि वे अपने पाल्य की शैक्षणिक प्रगति से संतुष्ट हैं तथा चाहते हैं कि वे महाविद्यालय की गरिमा को आगे बढ़ायें।

कुमारी उज्जवला कठाने ने कहा कि इस संस्था में अध्ययन–अध्यापन के साथ ही जो शैक्षणिक भ्रमण का कार्यक्रम आयोजित होता है, उससे विद्यार्थियों को देश–दुनिया के बारे में तरह–तरह की जानकारियां मिल रही है। इसी प्रकार यहां राष्ट्रीय स्तर के जो सेमिनार आयोजित होते हैं उनसे विभिन्न प्रांतों से आनेवाले विद्वानों के विचारों का लाभ यहां के विद्यार्थियों को मिल जाता है।

इस अवसर पर जनभागीदरी प्राध्यापिका शिल्पी ठाकुर ने कहा कि यहा के अनुशासनपूर्ण महौल में पढ़ाई करने के लिए विद्यार्थी उत्सुक रहते हैं। यही कारण कि यहां के विद्यार्थी कभी शिक्षकों के लिए समस्या नहीं बनते हैं। आपने छात्र–छात्राओं के अनुशासन की सराहना की तथा सुझाव दिये कि महाविद्यालय में सामूहिक महिला शौचालय की व्यवस्था होनी चाहिए।

संस्कृत विभाग के पांच विद्यार्थियों को ए ग्रेड

गायत्री परिवार हरिद्वार द्वारा आयोजत संस्कृति ज्ञान परीक्षा में दिग्विजय महाविद्यालय के पांच विद्यार्थियों को ए ग्रेड मिला है। साथ ही इस विभाग के एम. ए. पूर्व की छात्रा कुमारी केशरी धीवर को प्रावीण्य सूची मे दूसरा स्थान प्राप्त हुआ है। विद्यार्थियों की इस सफलता पर प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह ने उन्हें बधाई देते हुए बताया कि गायत्री परिवार हरिद्वार से प्राप्त प्रमाण पत्रों में महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों की सराहना की गई है

संस्कार और संस्कृति पर कार्यक्रम सम्पन्न

राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में 'संस्कार और संस्कृति' शीर्षक कार्यक्रम आयोजित हुआ। संस्कृत साहित्य परिषद द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में स्थानीय शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को भी शामिल किया गया था।

प्राचार्य डॉ.आर.एन. सिंह के अनुसार यह कार्यक्रम यूजीसी विस्तार गतिविधि के अंतर्गत आयोजित किया गया था। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय ने बताया कि इसमें लगभग एक सौ विद्यार्थियों को भारतीय संस्कार और संस्कृति के प्रति व्यावहारिक प्रशिक्षण दिए गए। साथ ही कार्यक्रम में शामिल विद्यार्थियों को परिषद द्वारा प्रकाशित पुस्तिका 'संस्कार और संस्कृति' की प्रति भी वितरित की गई।

श्री गणेश पूजन एवं सरस्वती वंदना से प्रारंभ किए गए इस कार्यक्रम में वैदिक विधान की देनिक पूजा एवं प्रार्थना विधि को गए मंत्रों के साथ सम्पन्न करने के डॉ.

राय ने आगे कहा कि भारतीय संस्कृति में पूज्य परंपरा होने के कारण ही हमारे यहां माता-पिता, गरू तथा बड़े जनों के प्रति सम्मान प्रकट करने को शिष्टाचार के रूप में शामिल किया गया है।

अतिथि वक्ता श्री राजेन्द्र द्विवेदी ने 16 संस्कारों का महत्व बताया तथा भारतीय संस्कृति में पूज्य परंपरा का भी उल्लेख किया। अपने कहा कि देव शक्तियों के आह्वान तथा विदा करने के भी वैदिक तरीके बतलाए गए हैं। संस्कृति के श्लोकों के सही उच्चारण तथा उसके मंत्रपाठ से होने वाले वैज्ञानिक लाभ को भी अपने विस्तार से बताया। कार्यक्रम समाप्ति के बाद कुमारी शिल्पी ठाकुर ने आभार प्रकट किया।

'पहुना' दैनिक 29.11.2011

संस्कार व संस्कृति पर कार्यक्रम आयोजित

राजनांदगांव। सामाजिक जीवन में घटते जीवन मूल्य के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए शासकीय दिग्विजय कॉलेज में संस्कार व संस्कृति शीर्षक कार्यक्रम का समापन हुआ। संस्कृत साहित्य परिषद द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में स्थानीय शिक्षण संस्थाओं के छात्रों को भी शामिल किया गया था। प्राचार्य डॉ. आरएन सिंह के अनुसार यह कार्यक्रम यूजीसी विस्तार गतिविधि के अंतर्गत आयोजित किया गया था। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. शंकर मुनिराय ने बताया कि इस दौरान लगभग 100 विद्यार्थियों को भारतीय संस्कार और संस्कृति के प्रति व्यावहारिक प्रशिक्षण पुस्तिका संस्कार और संस्कृति की प्रति भी वितरित की गई है। डॉ. राय ने कहा कि भारतीय संस्कृति में विनम्रता का बहुत महत्व है। हमें विनम्र बनने के लिए बड़े-बुजुर्गों के प्रति आदर भाव रखने का संस्कार दिया जाता है।

'हरिभूमि' दैनिक 29.11.2011